अन्नसुल जली फ़ी तहरीमि ईज़ाइ व सब्बिन अ़ली ﵁

अमीरुल मो'मिनीन ﵁ को ईज़ा पहुँचाने और बुरा भला कहने से मुता'ल्लिक अहादीसे नबवी ﷺ

मुरत्तब

ख़ुसरो क़ासिम

हिन्दी लिपियांतर

डॉ.शाहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

अन्नसुल जली फ़ी तहरीमि ईज़ाइ व सब्बिन अ़ली ﵁

अमीरुल मो’मिनीन ﵁ को ईज़ा पहुँचाने और बुरा भला कहने से मुता’ल्लिक़ अहादीस-ए-नबवी ﷺ

:: मुरत्तब ::

खुसरो क़ासिम

:: हिन्दी लिपियांतर ::

डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

नाम	:	**अन्नसुल जली फ़ी तहरीमि ईज़ाइ व सब्बिन अ़ली ﷺ**
मुरत्तब	:	**ख़ुसरो क़ासिम**
		अिसस्टंट प्रोफेसर मिकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट अ़लीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, अ़लीगढ़ उत्तरप्रदेश, भारत
हिन्दी लिपियांतर	:	**डो. शहज़ादहुसैन क़ाज़ी**
		फाउन्डर एन्ड चेरमेन ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत), मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, भारत
सन-ए-इशाअत	:	**2018**
हदिया	:	रु. 35/-
कम्पोसिंग एण्ड प्रिंटिंग	:	इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत), मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

8511021786

अर्ज़-ए-नाशिर

अमीरुल मो'मिनीन अ़ली इब्न-ए-अबी तालिब ﷺ आयात-ए-मुबाहिला की रु से "नफ़्स-ए-रसूल" है इसलिए बहुत से काम वह हैं जो अगर आपके साथ किए गए तो गोया जैसे रसूल ﷺ के साथ किए गए, जैसे आपसे मुहब्बत रसूलल्लाह ﷺ से मुहब्बत है, आपसे अदावत रसूल ﷺ से अदावत है। आपसे जंग गोया रसूलल्लाह ﷺ से जंग है।

यही मुआमिला अमीरुल मो'मिनीन ﷺ की ईज़ा रसानी और नउज़ु बिल्लाह आप पर सब ओ शतम का है। हर वह चीज़ जिससे आपको ईज़ा होगी वह बाइस-ए-ईज़ा रसूल ﷺ होगी। इस ज़ैल में एक ख़ास नुकते की तरफ़ इशारा कर दूँ जो हज़रात भी अमीरुल मो'मिनीन ﷺ के वालिद हज़रत अबू तालिब की शान में गुस्ताख़ी करते हैं वे यह ज़रूर ध्यान रखें कि यह अमल बाइस-ए-ईज़ा अमीरूल मो'मिनीन ﷺ है क्योंकि कोई बेटा ऐसा नहीं होगा जिसे अपने बाप की तनक़ीस से ईज़ा न हो। इस मुख़्तसर रिसाले में हम ने इस मौज़ूअ से मुता'ल्लिक़ अहादीस को जमा कर दिया है।

अल्लाह ﷻ हम सबको रसूलल्लाह ﷺ और आपके अह्ल-ए-बैत अतहार ﷺ की सच्ची मुहब्बत अता फरमाए। (आमीन)

तालिब-ए-शफ़ाअत-ए-रसूल ﷺ

ख़ुसरो क़ासिम

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर

मिकेनिकल इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट

ए.एम.यू. अ़लीगढ़

अनुवादक का निवेदन

अल्लाह ﷻ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ﷻ! के और मुहम्मद ﷺ अल्लाह ﷻ! के रसूल है। अल्लाह ﷻ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"अन्नसुल जली फ़ी तहरीमि ईज़ाइ व सब्बिन अ़ली ؑ"** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

आज हमारी आँख़ों के सामने एक ऐसा ज़माना गुज़र रहा है कि जिसमे नासबीय्यत और ख़ारजिय्यत उरुज़ पकड़ रही है, बुग्ज़े मौला अ़ली ؑ को कुछ फिरका परस्त लोंगों ने ख़ुद के मस्लक का अहम हिस्सा बना दिया है। ऐसे हालात में अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी के **Mechanical Engineering Department** के **Assistant Professor** **हज़रत ख़ुसरो क़ासिम साहब** ने जिम्मा उठाया कि ऐसे नासबी, ख़ारजी हमलो का किताबी शक्लो में जवाब दिया जाए। मस्लके अह्ले सुन्नत में मुहब्बत-ए-अहले बैत ؑ और मुहब्बत-ए-अ़ली ؑ ये शीयत नहीं है, ये राफ़ज़ीयत नहीं है बलकि ये तो अह्ले सुन्नत का **1400** साल से चला आ रहा मजबूत अक़ीदा है, दीन का मजबूत सतून है। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब ने अपनी किताबो में सिर्फ और सिर्फ अह्ले सुन्नत की किताबो के हवाल पेश किये जो मस्लके अह्ले सुन्नत के **1400** साल के मुफस्सिरीन, मुहद्दिसीन, मुअर्रिख़ीन मुहक्क़िीन का इकट्ठा किया हुआ सरमाया है। प्रोफेसर साहब ने ख़ुद को अह्ले सुन्नत कहलाने वाले अह्ल-ए-हदीस और अह्ल-ए-देवबन्द मस्लक के उलमा व मुहद्दिसीन की किताबो के हवाले भी पेश किये है - जैसे कि अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी। प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब को हदीस बयान करने की सनद भी हासिल हैं जो इमाम अली रज़ा ؑ से मिलती है जिसे इस गुलाम ने अपने आँख़ों से देख़ी हैं. अल्लाह ﷻ! उनके इस काम का बदला अता फरमाए और ब-रोज-ए-कयामत उनको, उनकी नस्लों को ख़ातमुन्नबी रसूलल्लाह ﷺ के हाथो जाम-ए-कौसर नसीब फरमाये .... आमीन।

इस बीच प्रोफेसर ख़ुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"ख़तीब-ए-अह्ले बैत मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)"** का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा'ना में **Confuse** हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले **"दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुजार हूँ।

अल्लाह ﷻ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलल्लाह ﷺ व अहल-ए-बैत ؑ की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहेज़ादहुसैन यासीनमीयां काज़ी

हदीस-1

١ - كنت جالساً في المسجد مع رجلين ، فتذاكرنا علياً فتناولنا منه ، فأقبل رسول الله ﷺ مغضباً يعرف في وجهه الغضب ، فقلت: أعوذ بالله من غضب رسول الله ﷺ ، قال ﷺ: مالكم ولي ، من آذى علياً فقد آذاني ، يقولها ثلاث مرات .

راوي : مصعب بن سعد محدث : بوصيري مصدر: الخيرة المهرة صفحه يا رقم : ٧/ ٢٠١

मैं दो शख़्सों के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, हज़रत अली ﵁ का तज़्किरा हुआ, तो हम ने उनकी शान में कोई नामुनासिब बात कह दी, रसूलल्लाह ﷺ गुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए, गुस्सा आपके चेहरे पर नुमायाँ था, मैं ने कहा: मैं रसूलल्लाह ﷺ के ग़ज़ब से अल्लाह ﷻ की पनाह चाहता हूँ, आप ﷺ ने फरमाया: "तुम्हारा मुझसे क्या तआल्लुक़, जिसने अली ﵁ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी", यह बात आपने तीन मर्तबा कही। (**रावी:** मसअब बिन साद ﵁ **मुहद्दिस:** इमाम बूसीरी ﵀, **मसदर (Source)** : अलख़ैरतुल महरा सफ़्हा या रक़्म 7/ 201)

हदीस-2

٢- كنت جالساً في المسجد أنا و رجلين معي ، فتذاكرنا علياً فتناولنا منه ، فأقبل رسول الله ﷺ غضبان ،يعرف في وجهه الغضب ، فتعوذت بالله من غضبه ، فقال ﷺ: مالكم ولي ، من آذى علياً فقد آذاني۔

راوي : سعد بن ابي وقاص ۔ محدث: هيثمي ۔ مصدر: مجمع الزوائد۔ صفحہ:٩/١٣٢۔

मैं दो शख़्सों के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, हज़रत अ़ली ؓ का तज़्किरा हुआ, तो हम ने उनकी शान में कोई नामुनासिब बात कह दी, रसूलल्लाह ﷺ गुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए, गुस्सा आपके चेहरे पर नुमायाँ था, मैं ने कहा: मैं रसूलल्लाह ﷺ के ग़ज़ब से अल्लाह ﷻ की पनाह चाहता हूँ, आप ﷺ ने फरमाया: ''तुम्हारा मुझसे क्या तआल्लुक़, जिसने अ़ली ؓ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी ।'' (**रावी:** साद बिन अबी वक़्क़ास ؓ, **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी ؒ, **मसदर (Source) :** मजमाउल ज़वाइद सफ़्हा 9/132)

हदीस-3

٣- خرجت مع عليّ إلى اليمن فجفاني في سفري ذلك ، حتى وجدت في نفسي عليه ، فلما قدمت المدينة أظهرت شكايته في المسجد، حتى سمع بذلك رسول الله ﷺ ، فدخلت المسجد ذات غدلة، ورسول الله ﷺ جالس في ناس من أصحابه ، فلما رآني أبدلي يقول: حدد إليّ النظر ، حتى إذا جلست قال: يا عمرو! والله ،لقد آذيتني ، قلت: أعوذ بالله من أذاك يا رسول الله ، قال: بلى، من آذى علياً فقد آذاني .

راوی : عمرو بن شاس اسلمی محدث : هیثمی مصدر: مجمع الزوائد. صفحه : ۱۳۲، ۹

मैं हज़रत अ़ली ؓ के साथ यमन गया, मेरे इस सफ़र में उन्होंने मेरे साथ कुछ जफ़ा की, जब मैं मदीना आया तो मैं ने मस्जिद में अपनी शिकायत का इज़्हार किया, रसूलल्लाह ﷺ ने उसे सुन लिया, एक दिन जब मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो रसूलल्लाह ﷺ अपने कुछ सहाबा के साथ बैठे हुए थे, आपने मुझे घूर कर देखा, जब मैं बैठ गया तो आप ﷺ ने फ़रमाया: ''ऐ उमरो! अल्लाह ﷻ की क़सम! तुमने मुझे ईज़ा दी'', मैं ने कहा: ''ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल! ﷺ आपकी ईज़ा से मैं अल्लाह ﷻ की पनाह चाहता हूँ'', आप ﷺ ने फ़रमाया: ''क्यूँ नहीं, जिसने अ़ली ؓ को ईज़ा दी, उसने मुझे ईज़ा दी''। (**रावी:** उमरो बिन शास असलमी ؓ, **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी ؒ **मसदर (Source):** मजमाउल ज़वाइद सफ़्हा 9/132)

हदीस-4

٤- خرجت مع عليّ إلى اليمن فجفاني في سفري ذلك ، حتى وجدت في نفسي ، فلما قدمت المدينة أظهرت شكايته في المسجد، حتى سمع بذلك رسول الله ﷺ ، فدخلت المسجد ذات غداة ، ورسول الله ﷺ جالس في ناس من أصحابه ، فقال: يا عمرو! والله ،قد آذيتني ، قلت: أعوذ بالله من أذاك يا رسول الله ، قال: بلى ، من آذى علياً فقد آذاني .

راوی: عمرو بن شاس اسلمی محدث: شوکانی مصدر: در السحابة صفحه: یا رقم : ١٦٤

मैं हज़रत अ़ली ﷺ के साथ यमन गया, मेरे इस सफ़र में उन्होंने मेरे साथ कुछ जफ़ा की, मैं दिल में उन पर गुस्सा हुआ, जब मैं मदीना आया तो मैं ने मस्जिद में अपनी शिकायत का इज़हार किया, रसूलल्लाह ﷺ ने उसे सुन लिया, एक दिन जब मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो रसूलल्लाह ﷺ अपने कुछ सहाबा के साथ बैठे हुए थे, आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ उमरो! अल्लाह ﷻ की क़सम! तुमने मुझे ईज़ा दी," मैं ने कहा: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! आपकी ईज़ा से मैं अल्लाह ﷻ की पनाह चाहता हूँ," आपने फ़रमाया: "क्यूँ नहीं, जिसने अ़ली ﷺ को ईज़ा दी, उसने मुझे ईज़ा दी ।" (**रावी:** उमरो बिन शास असलमी ﷺ, **मुहद्दिस:** इमाम शौकानी ﷺ, **मसदर (Source) :** दरुल सहाबा सफ़्हा: या ऱक्म: 164)

हदीस-5

٥- كنت جالساً في المسجد أنا ومعي رجلان ، فنلنا من علي، فأقبل رسول الله ﷺ غضبان ، يعرف في وجهه الغضب، فتعوذنا بالله من غضبه ، فقال: مالكم ومالي ، من آذى علياً فقد آذاني .

راوی: سعد ابن ابی وقاص محدث : شوکانی

مصدر : در السحابه صفحه یا رقم : ١٦٥

मैं दो शख़्सों के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, हज़रत अ़ली ﷺ का तज़्किरा हुआ, तो हमने उनकी शान में कोई नामुनासिब बात कह दी, रसूलल्लाह ﷺ गुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए, गुस्सा आपके चेहरे पर नुमायाँ था, हमने रसूलल्लाह ﷺ के ग़ज़ब से अल्लाह ﷻ की पनाह चाही, आप ﷺ ने फ़रमाया: "तुम्हारा मुझ से क्या तआल्लुक़, जिसने अ़ली ﷺ को ईज़ा दी, उसने मुझे ईज़ा दी।"
(**रावी:** साद इब्न-ए-अबी वक़्क़ास ﷺ **मुहद्दिस:** शौकानी ﷺ, **मसदर (Source)** : दरुल सहाबा सफ़हा या रक़्म: 165)

हदीस-6

٦۔ قال لي رسول الله ﷺ: قد آذيتني، قلت: يا رسول الله! ما أحب أن أوذيك، قال: من آذى علياً فقد آذاني۔
راوی: عمرو بن شاس محدث: ابن حبان
مصدر: صحيح ابن حبان رقم: ٦٩٢٣

मुझसे रसूलल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "तुमने मुझे ईज़ा दी", मैं ने कहा: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ मैं आपको ईज़ा देना पसंद नहीं करता", आपने फ़रमाया: "जिसने अ़ली ﷺ को ईज़ा दी, उसने मुझे ईज़ा दी।" (**रावी:** उमरो बिन शास ﷺ, **मुहद्दिस:** इब्न-ए-हिब्बान ﷺ **मसदर (Source)** : सहीह इब्न-ए-हिब्बान, रक़्म: 6923)

हदीस-7

٧۔ من آذى علياً فقد آذاني۔
جس نے علی کو ایذاء دی، اس نے مجھے ایذاء دی۔
راوی: عمر بن خطابؓ محدث: محمد جار الله صعدی
مصدر: النوافح العطرة صفحہ یا رقم: ٣٤٣

"जिसने अ़ली ﷺ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी"। (**रावी:** उमर बिन ख़त्ताब ﷺ **मुहद्दिस:** मुहम्मद जारुल्लाह सादी ﷺ, **मसदर (Source)** : अलनदाफ़ह अलअतरह, सफ़हा या रक़म: 343)

हदीस-8

۸۔ من آذی علياً فقد آذانی .
جس نے علی کو ایذاء دی، اس نے مجھے ایذاء دی۔
راوی: عمرو بن شاس اور جابر بن عبد الله
محدث: البانی مصدر : صحيح الجامع رقم: ٥٩٢٤

"जिसने अ़ली ﷺ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी"। (**रावी:** उमरो बिन शास और जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source)** : सहीहुल जामेअ, रक़म: 5924)

हदीस-9

۹۔ من آذی علياً فقد آذانی .
جس نے علی کو ایذاء دی، اس نے مجھے ایذاء دی۔
راوی: صحابه کی ایك جماعت محدث: البانی
مصدر: السلسلة الصحيحة رقم: ٢٢٩٥

"जिसने अ़ली ﷺ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी"। (**रावी:** सहाबा की एक जमाअत ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source)** : अलसिलसिलतुल सहीहा, रक़म: 2295)

हदीस-10

١٠- من أطاع علياً فقد أطاعني ، ومن عصى علياً فقد عصاني، ومن عصاني فقد عصى الله ، ومن أحب علياً فقد أحبني ، ومن أحبني فقد أحب الله ، ومن أبغض علياً فقد أبغضني ، ومن أبغضني فقد أبغض الله ، لا يحبك إلا مؤمن ولا يبغضك إلا كافر أو منافق۔

راوی: یعلی بن مره　　　محدث: ابن عدی

مصدر: الكامل فی الضعفاء　　　صفحه : ٥٦٠/٥۔

“जिसने अ़ली ﷺ की इताअत की, उसने मेरी इताअत की, और जिस ने अ़ली ﷺ की नाफ़रमानी की, उसने मेरी नाफ़रमानी की, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह ﷻ की नाफ़रमानी की, जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की, और जिसने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया, (अय अ़ली ﷺ !) तुमसे मुहब्बत नहीं करेगा, मगर मो’मिन, और तुमसे बुग्ज़ नहीं करेगा, मगर काफ़िर या मुनाफ़िक़”। (**रावी:** यअ़ली बिन मर्रह ﷺ **मुहद्दिस:** इब्न-ए-अदी ﷺ, **मसदर (Source)** : अलकामिल फ़िल सअफ़ा, सफ़्हा: 5/560)

हदीस-11

١١- من أطاع علياً فقد أطاعني ، ومن عصى علياً فقد عصاني، ومن عصاني فقد عصى الله، ومن أحب علياً فقد أحبني، ومن أحبني فقد أحب الله، ومن أبغض علياً فقد أبغضني، ومن أبغضني فقد أبغض الله، لا يحبك إلا مؤمن ولا يبغضك إلا كافر أو منافق۔

راوی: یعلی بن مره

محدث: ابن القیسرانی　مصدر: ذخیرة الحفاظ

صفحه : ٢٢١٠/٤

“जिस ने अ़ली ﷺ की इताअत की उसने मेरी इताअत की, और जिसने अ़ली ﷺकी नफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उस ने अल्लाह ﷻ की नाफ़रमानी की, जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की, और जिसने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया, उसने मुझसे बुग्ज़ किया और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया, (अय अ़ली ﷺ!) तुमसे मुहब्बत नहीं करेगा मगर मो’मिन, और तुमसे बुग्ज़ नहीं करेगा मगर काफ़िर और मुनाफ़िक़”। (**रावी:** यअ़ली बिन मर्रह ﷺ **मुहद्दिस:** इब्नुल क़ैसरानी ﷺ, **मसदर (Source)** : ज़ख़ीरतुल हग़ाज़, सफ़हा: 4/221)

हदीस-12

١٢- بعث رسول الله ﷺ علياً أميراً على اليمن ، وبعث خالد بن الوليد على الجبل ، فقال: إن اجتمعتما فعلىّ على الناس ، فالتقوا وأصابوا من الغنائم مالم يصيبوا مثله ، وأخذ علىّ جارية من الخمس ، فدعا خالد بن الوليد بريدة ، فقال: اغتنمها فأخبر النبى ﷺ بما صنع ، فقدمت المدينة ودخلت المسجد ،ورسول الله ﷺ فى منزله ، وناس من أصحابه على بابه ، فقالوا: ماالخبر يا بريدة ؟ فقلت: خير ، فتح الله على المسلمين ، فقالوا: ما أقدمك ؟ قال: جارية أخذها على من الخمس ، فجئت لأخبر النبى ﷺ ، قالوا: فأخبره ، فإنه يسقطه من عين رسول الله ﷺ ،ورسول الله ﷺ يسمع الكلام ، فخرج مغضباً وقال: مابال أقوام ينقصون علياً ،من ينتقص علياً فقد انتقصنى ،ومن فارق علياً فقد فارقنى ، إن علياً منى وأنا منه ، خلق من طينتى وخلقت من طينة إبراهيم ، وأنا أفضل من إبراهيم ، "ذرية بعضها من بعض ، والله سميع عليم" وقال: يا بريدة! أما علمت أن لعلى أكثر من الجارية اللتى أخذوإنه وليكم من بعدى ، فقلت: يا رسول الله! بالصحبة ، إلا بسطت يدك حتى أبايعك على الإسلام جديداً ،قال: فمافارقته حتى بايعته على الإسلام-

راوى: بريده: محدث: طبرانى مصدر: معجم اوسط

صفحه يا رقم: ٦/١٦٢

हुज़ूर अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली رضي الله عنه को यमन का अमीर बना कर भेजा, और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضي الله عنه को जबल का अमीर बना कर भेजा, और यह फ़रमाया: अगर तुम दोनों इकट्ठे हो जाओ, तो अ़ली رضي الله عنه अमीर होंगे, चुनांचे ये सब लोग इकट्ठे हो गए और बहुत सी ग़नीमत हासिल की, कि उस जैसी ग़नीमत कभी न हाथ आई थी, हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ख़ुम्स में से एक बाँदी ले ली, तो हज़रत ख़ालिद رضي الله عنه ने हज़रत बुरैदा رضي الله عنه को बुलाया, और कहा: ''इसकी ख़बर रसूल ﷺ को जा कर दो'', (हज़रत बुरैदा رضي الله عنه फ़रमाते हैं) मैं मदीना आया और मस्जिद में दाख़िल हुआ, रसूलल्लाह ﷺ अपने घर में थे और कुछ सहाबा आप ﷺ के दरवाज़े पर थे, लोगों ने पूछा: ''क्या ख़बर है? ऐ बुरैदा''! मैं ने कहा: ''अच्छी ख़बर है, अल्लाह عزوجل ने मुसलमानों को फ़तह दी'', उन्होंने पूछा: ''आपके आने की क्या वजह है''? मैं ने कहा: हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ख़ुम्स से एक बाँदी ले ली है, तो मैं रसूलल्लाह ﷺ को इसकी ख़बर देने आया हूँ, बाज़ लोगों ने कहा: "हाँ, आप ﷺ को इसकी ख़बर दो, इससे अ़ली رضي الله عنه हुज़ूर ﷺ की नज़र में कम रुतबा हो जाएँगे", ''आप ﷺ ये सब बातें सुन रहे थे, आप गुस्से में बाहर निकल कर आए और फ़रमाया: "लोगों को क्या हुआ कि अ़ली رضي الله عنه की तनक़ीस करते हैं, जिसने अ़ली رضي الله عنه की तनक़ीस की उसने मेरी तनक़ीस की, और जिसने अ़ली رضي الله عنه को छोड़ा, उसने मुझे छोड़ा, अ़ली رضي الله عنه मुझसे हैं और मैं अ़ली رضي الله عنه से हूँ, उसे मेरी मिट्टी से पैदा किया गया है और मुझे हज़रत इब्राहीम عليه السلام की मिट्टी से पैदा किया गया है, और मैं हज़रत इब्राहीम عليه السلام से अफ़्ज़ल हूँ। ''ذرية بعضها من بعض، والله سميع عليم'' और आप ﷺ ने फ़रमाया: ऐ बुरैदा رضي الله عنه! क्या तुम नहीं जानते कि अ़ली رضي الله عنه के लिए इससे ज़ियादा बांदियाँ हैं, जो उन्होंने ली हैं, और वो मेरे बाद तुम्हारे वली हैं, ''मैं ने (हज़रत बुरैदा رضي الله عنه)कहा: ऐ अल्लाह عزوجل के रसूल ने! आपको सोहबत का वास्ता! अपना हाथ दीजिये, ताकि मैं आपके हाथ पर इस्लाम की अज़ सर-ए-नौ बैअत करूँ'', फिर मैं ने जब तक बैअत न कर ली, आपसे जुदा न हुआ। (**रावी:** बुरैदा رضي الله عنه, **मुहद्दिस:** इमाम तबरानी رحمه الله, **मसदर (Source) :** मोअजम औसत, सफ़्हा या रक़्म: 6/162)

हदीस-13

١٣- بعث رسول الله ﷺ علياً أميراً على اليمن، وبعث خالد بن الوليد على الجبل، فقال: إن اجتمعتما فعليٌ على الناس، فالتقوا وأصابوا من الغنائم مالم يصيبوا مثله، وأخذ عليٌ جارية من الخمس، فدعا خالد بن الوليد بريدةً، فقال: اغتنمها فأخبر

النبيﷺ بما صنع، فقدمت المدينة ودخلت المسجد، ورسول اللهﷺ في منزله، وناس من أصحابه على بابه، فقالوا: ماالخبر يا بريدة؟ فقلت: خير، فتح الله على المسلمين، فقالوا: ما أقدمك؟ قال: جارية أخذها على من الخمس، فجئت لأخبر النبيﷺ، قالوا: فأخبره، فإنه يسقطه من عين رسول اللهﷺ، ورسول اللهﷺ يسمع الكلام، فخرج مغضباً فقال: مابال أقوام ينقصون علياً، من ينتقص علياً فقد انتقصني، ومن فارق علياً فقد فارقني، إن علياً مني وأنا منه، خلق من طينتي وخلقت من طينة إبراهيم، وأنا أفضل من إبراهيم، "ذرية بعضها من بعض، والله سميع عليم" وقال: يا بريدة! أما علمت أن لعلي أكثر من الجارية التي أخذوإنه وليكم من بعدي، فقلت: يا رسول الله! بالصحبة، إلا بسطت يدك فبايعتني على الإسلام جديداً، قال: فما فارقته حتى بايعته على الإسلام۔

راوی: بریدہ بن حصیب اسلمی

محدث: هیثمی مصدر: مجمع الزوائد

صفحه یارقم: ۹/۱۳۱۔

हुज़ूर अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली رضي الله عنه को यमन का अमीर बना कर भेजा, और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضي الله عنه को जबल का अमीर बना कर भेजा, और यह फ़रमाया: "अगर तुम दोनों इकट्ठे हो जाओ, तो अ़ली رضي الله عنه अमीर होंगे", चुनांचे ये सब लोग इकट्ठे हो गए और बहुत सी ग़नीमत हासिल की, कि उस जैसी ग़नीमत कभी न हाथ आई थी, हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ख़ुम्स में से एक बाँदी ले ली, तो हज़रत ख़ालिद رضي الله عنه ने हज़रत बुरैदा رضي الله عنه को बुलाया, और कहा: इसकी ख़बर रसूल ﷺ को जा कर दो, (हज़रत बुरैदा رضي الله عنه फ़रमाते हैं) मैं मदीना आया और मस्जिद में दाख़िल हुआ, रसूलल्लाह ﷺ अपने

घर में थे और कुछ सहाबा आप ﷺ के दरवाज़े पर थे, लोगों ने पूछा: “क्या ख़बर है? ऐ बुरैदा”! “मैं ने कहा: अच्छी ख़बर है, अल्लाह ﷻ ने मुसलमानों को फ़तह दी”, उन्होंने पूछा: “आपके आने की क्या वजह है?” मैं ने कहा: “हज़रत अ़ली ؓ ने ख़ुम्स से एक बाँदी ले ली है, तो मैं रसूलल्लाह ﷺ को इसकी ख़बर देने आया हूँ,” बाज़ लोगों ने कहा: हाँ, आप ﷺ को इसकी ख़बर दो, इससे अ़ली ؓ हुज़ूर ﷺ की नज़र में कम रुतबा हो जाएँगे”, आप ﷺ ये सब बातें सुन रहे थे, आप ﷺ गुस्से में बाहर निकल कर आए और फ़रमाया: “लोगों को क्या हुआ कि अ़ली ؓ की तनक़ीस करते हैं, जिसने अ़ली ؓ की तनक़ीस की उसने मेरी तनक़ीस की, और जिसने अ़ली ؓ को छोड़ा, उसने मुझे छोड़ा, अ़ली ؓ मुझसे हैं और मैं अ़ली ؓ से हूँ, उसे मेरी मिट्टी से पैदा किया गया है और मुझे हज़रत इब्राहीम علیہ السلام की मिट्टी से पैदा किया गया है, और मैं हज़रत इब्राहीम علیہ السلام से अफ़ज़ल हूँ”। "ذرية بعضها من بعض، والله سميع عليم" और आप ﷺ ने फ़रमाया: “ऐ बुरैदा! क्या तुम नहीं जानते कि अ़ली ؓ के लिए इससे ज़ियादा बांदियाँ हैं, जो उन्होंने ली हैं, और वो मेरे बाद तुम्हारे वली हैं, मैं ने कहा: ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! आपको सोहबत का वास्ता! अपना हाथ दीजिये और मुझसे इस्लाम की अज़ सर-ए-नौ (फिर से) बैअत लिजिये, फिर मैं ने जब तक बैअत न कर ली, आपसे जुदा न हुआ। (**रावी:** बुरैदा बिन हसीब असलमी ؓ **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी رحمۃ اللہ علیہ, **मसदर (Source)** : मजमाउल ज़वाइद, सफ़्हा या रक़्म: 9/131)

हदीस-14

۱۴۔ مــابــال أقـوام يـنـقـصـون عـليـاً ،من ينتقص علياً فقد انتـقـصـنـي ،ومن فارق علياً فقد فارقني ، إن علياً مني و أنا منه ، خـلـق مـن طيـنتـي وخـلـقـت مـن طينة إبراهيم ، وأنا أفضل من إبراهيم ، "ذرية بعضها من بعض ، والله سميع عليم".

راوى: بريده بن حصيب اسلمى محدث : البانى

مصدر : السلسلة الضعيفة صفحه يارقم:٤٩٥٦۔

“लोगों को क्या हुआ कि अ़ली ﷺ की तनक़ीस करते हैं, जिसने अ़ली ﷺ की तनक़ीस की उसने मेरी तनक़ीस की, और जिसने अ़ली ﷺ को छोड़ा, उसने मुझे छोड़ा, अ़ली ﷺ मुझसे हैं और मैं अ़ली ﷺ से हूँ, उसे मेरी मिट्टी से पैदा किया गया है और मुझे हज़रत इब्राहीम علیہ السلام की मिट्टी से पैदा किया गया है, और मैं हज़रत इब्राहीम علیہ السلام से अफ़ज़ल हूँ।”

(**रावी:** बुरैदा बिन हसीब असलमी ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source) :** अलसिलसिलतुल ज़ईफ़ा, सफ़हा या रक़्म: 4956)

हदीस-15

١٥ـ بعث رسول الله ﷺ علياً أميراً على اليمن وخرج معه رجل من أسلم، يقال له عمرو بن شاس فرجع وهو يذم علياً ويشكوه، فبعث إليه رسول الله ﷺ فقال: اخسأ يا عمرو! هل رأيت من علي جوراً في حكمه أو أثرة في قسمه؟ قال: اللهم لا، قال: فعلام تقول الذي بلغني، قال: بغضه لا أملك، قال: فغضب رسول الله ﷺ حتى عرف ذلك في وجهه، ثم قال: من أبغضه فقد أبغضني، ومن أبغضني فقد أبغض الله، ومن أحبه فقد أحبني ومن أحبني فقد أحب الله تعالى ـ

راوی: اسلم قبطی ابو رافع مولی رسول الله ﷺ

محدث: هیثمی مصدر: مجمع الزوائد

صفحه یا رقم: ۱۳۲/ ۹.

रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ को यमन का अमीर बना कर भेजा, उन के साथ क़बीला असलम का एक शख़्स भी गया, जिसका नाम उमरो बिन शास था, जब वो वापस हुआ तो हज़रत अ़ली رضی اللہ عنہ की शिकायत कर रहा था, रसूलल्लाह ﷺ ने उसे बुलाया और फ़रमाया: ''ऐ उमरो! क्या तुमने अ़ली رضی اللہ عنہ के फ़ैसले में कोई ज़ुल्म या उसकी तक़सीम में कोई नाइंसाफ़ी देखी?'' उसने कहा: ''नहीं'', आप ﷺ ने फरमाया: ''फिर क्यूँ तुम वो बात कहते हो, जो मुझ तक पहुँची हो?'' उसने कहा: "मैं उनके बुग़्ज़ पर क़ाबू नहीं रख पाता,'' रसूलल्लाह ﷺ ये सुन कर गुस्सा हुए हत्ता कि इसका असर आपके चेहरा-ए-अनवर पर महसूस हुआ, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: ''जिसने उस (अ़ली رضی اللہ عنہ)से बुग़्ज़ किया उसने मुझसे बुग़्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग़्ज़ किया उसने अल्लाह عزوجل से बुग़्ज़ किया, और जिसने उससे मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह عزوجل से मुहब्बत की ।''

(**रावी:** असलम क़िब्ती अबू राफ़ेअ رضی اللہ عنہ मौला रसूलल्लाह ﷺ **मुहद्दिस :** इमाम हैसमी رحمہ اللہ, **मसदर (Source) :** मजमाउल ज़वाइद, सफ़्हा या रक़्म: 9/132)

हदीस-16

١٦۔ بعث رسول الله ﷺ علياً أميراً على اليمن وخرج معه رجل من أسلم، يقال له عمرو بن شاس فرجع وهو يذم علياً ويشكوه، فبعث إليه رسول الله ﷺ فقال: اخسأ يا عمرو! هل رأيت من علي جوراً في حكمه أو أثرة في قسمه؟ قال: اللهم لا، قال: فعلام تقول الذي بلغني، قال: بغضه لا أملك، قال: فغضب رسول الله ﷺ حتى عرف ذلك في وجهه، ثم قال: ومن أبغضه فقد أبغضني، ومن أبغضني فقد أبغض الله، ومن أحبه فقد أحبني ومن أحبني فقد أحب الله تعالى۔

راوی: اسلم قبطی ابو رافع مولی رسول الله ﷺ محدث: ابن حجر عسقلانیؒ مصدر: مختصر البزار صفحه یا رقم: ٣١٧/٢۔

रसूलल्लाह ﷺ ने हज़रत अ़ली رضي الله عنه को यमन का अमीर बना कर भेजा, उन के साथ क़बीला असलम का एक शख़्स भी गया, जिसका नाम उमरो बिन शास था, जब वो वापस हुआ तो हज़रत अ़ली رضي الله عنه की शिकायत कर रहा था, रसूलल्लाह ﷺ ने उसे बुलाया और फ़रमाया: "ऐ उमरो! क्या तुमने अ़ली رضي الله عنه के फ़ैसले में कोई ज़ुल्म या उसकी तक़्सीम में कोई नाइंसाफ़ी देखी?" उसने कहा: "नहीं", आप ﷺ ने फरमाया: "फिर क्यूँ तुम वो बात कहते हो, जो मुझ तक पहुँची हो?" उसने कहा: "मैं उनके बुग्ज़ पर क़ाबू नहीं रख पाता," रसूलल्लाह ﷺ ये सुन कर गुस्सा हुए हत्ता कि इसका असर आपके चेहरा-ए-अनवर पर महसूस हुआ, फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: "जिसने उस (अ़ली رضي الله عنه) से बुग्ज़ किया उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया, और जिसने उससे मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की ।" (**रावी:** असलम क़िब्ती अबू राफ़ेअ رضي الله عنه मौला रसूलल्लाह ﷺ **मुहद्दिस** : इब्ने हजर अस्कलानी رحمه الله, **मसदर (Source)** : मुख़्तसर अल बाज़ार, सफ़्हा या रक़्म: 2/317)

हदीस-17

١٧- من أحب علياً فقد أحبني ومن أحبني فقد أحب الله تعالى، ومن أبغض علياً فقد أبغضني ، ومن أبغضني فقد أبغض الله .

راوی: ام سلمه هند بنت ابو امیه محدث : هیثمی

مصدر: مجمع الزوائد صفحه یا رقم : ۱۳۵/ ۹.

"जिसने अ़ली رضي الله عنه से मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिसने मुझसे मुहब्बत की, उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की, और जिसने अ़ली رضي الله عنه से बुग्ज़ किया, उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया, उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया ।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिन्त-ए-अबू उमैया رضي الله عنها **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी رحمه الله, **मसदर (Source)** : 'मजमाउल ज़वाइद', सफ़्हा या रक़्म: 9/135)

हदीस-18

١٨- من أحب علياً فقد أحبني ومن أحبني فقد أحب الله عزوجل، ومن أبغض علياً فقد أبغضني ، ومن أبغضني فقد أبغض الله

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه محدث: البانی

مصدر: السلسلة الضعيفة صفحه یارقم: ١٢٩٩۔

"जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की, और जिसने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया, उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया, उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया।"
(**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिन्त-ए-अबू उमैया ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source):** अलसिलसिलतुल ज़ईफ़ा, सफ़हा या रक़म: 1299)

हदीस-19

١٩- من أطاعني فقد أطاع الله ومن عصاني فقد عصى الله، ومن أطاع علياً فقد أطاعني ،ومن عصى علياً فقد عصاني .

راوی: ابوذر غفاری محدث: البانی

مصدر: السلسلة الضعيفة صفحه یارقم: ٤٨٩٢

"जिसने मेरी इताअत की उसने अल्लाह ﷻ की इताअत की, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह ﷻ की नाफ़रमानी की, और जिसने अ़ली ﷺ की इताअत की उसने मेरी इताअत की, और जिसने अ़ली ﷺ की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की।"
(**रावी:** अबूज़र ग़िफ़ारी ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source)** : अलसिलसिलतुल ज़ईफ़ा, सफ़हा या रक़म: 4892)

हदीस-20

٢٠- من أحب علياً فقد أحبني ومن أحبني فقد أحب الله،ومن أبغض علياً فقد أبغضني، ومن أبغضني فقد أبغض الله .

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه محدث: وداعی

مصدر: الإلزامات والتتبع صفحه یارقم: ٢٩٠.

"जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की, और जिसने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया, उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया, उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिन्त-ए-अबू उमैया ﷺ **मुहद्दिस:** वदाई ﷺ, **मसदर (Source)** : 'अलइल्ज़ामात वल ततबअ' सफ़हा या रक़म: 290)

हदीस-21

٢١- من أحبني فليحب علياً ،ومن أحب علياً فليحب ابنتي فاطمة ، ومن أحب ابنتي فاطمة فليحب الحسن والحسين ، إنهما لفرطي أهل الجنة ،وإن أهل الجنة ليباشرون ويسارعون إلى رؤيتهم ، ينظرون إليهم ، فحبهم إيمان وبغضهم نفاق ،ومن أبغض أحداً من أهل بيتي ،فقد حرم شفاعتي ، بأني نبي مكرم ، بعثني الله بالصدق فحبوا أهل بيتي وحبوا علياً .

راوی : انسؓ بن مالک محدث :ابن عدی

مصدر: الكامل في الضعفاء صفحه يا رقم : ٤٣٤/ ٥

जो मुझ से मुहब्बत करता है, उसे चाहिए कि अ़ली ﷺ से मुहब्बत करे, और जो अ़ली ﷺ से मुहब्बत करता है, उसे चाहिए कि वह मेरी बेटी फ़ातिमा ﷺ से मुहब्बत करे, और जो मेरी बेटी फ़ातिमा ﷺ से मुहब्बत करता है उसे चाहिए कि उनके दोनो बेटो हसन ﷺ और हुसैन ﷺ से मुहब्बत करे, ये दोनों अह्ल-ए-जन्नत के सरदार हैं, और जन्नत वाले इन्हें देखने में एक दूसरे से मुक़ाबिला करेंगे और एक दूसरे को ख़ुशख़बरी देंगे, उनकी मुहब्बत ईमान है और उनका बुग्ज़ निफ़ाक़ की अलामत है जिसने मेरे अह्ले बयत में से किसी से बुग्ज़ किया, वह मेरी शफ़ाअत से महरुम होगा, बेशक मैं नबी हूँ, जिसे अल्लाह ﷻ ने इ़ज़्ज़त बख़्शी है, उसने मुझे सच के साथ भेजा है, मैं उसके वास्ते से कहता हूँ कि मेरे अह्ल-ए-बैत से और अ़ली से मुहब्बत करो।" (**रावी:** अनस बिन मालिक ﷺ **मुहद्दिस:** इब्न-ए-अदी ﷺ, **मसदर (Source)** : अलकमाल फ़िल ग़अफ़ा, सफ़हा या रक़म: 5/434)

हदीस-22

٢٢- من أحبني فليحب علياً ،ومن أحب علياً فليحب ابنتي ، ومن أحب ابنتي فاطمة فليحب ولديهما الحسن والحسين ، إنهما لغرطى أهل الجنة ،وإن أهل الجنة ليباشرون ويسارعون إلى رؤيتهم ، ينظرون إليهم، فحبهم إيمان وبغضهم نفاق، ومن أبغض أحداً من أهل بيتي، فقد حرم شفاعتي، بأني نبي مكرم، بعثني الله بالصدق فحبوا أهل بيتي وحبوا علياً .

راوی : انسؓ بن مالك محدث :ابن القیسرانی

مصدر: ذخيرة الحفاظ صفحه یا رقم :٢١٧٩، ٤

"जो मुझ से मुहब्बत करता है, उसे चाहिए कि अ़ली ﵁ से मुहब्बत करे, और जो अ़ली ﵁ से मुहब्बत करता है, उसे चाहिए कि वह मेरी बेटी फ़ातिमा ﵂ से मुहब्बत करे, और जो मेरी बेटी फ़ातिमा ﵂ से मुहब्बत करता है उसे चाहिए कि उनके दोनो बेटो हसन ﵁ और हुसैन ﵁ से मुहब्बत करे, ये दोनों अह्ल-ए-जन्नत के सरदार हैं, और जन्नत वाले इन्हें देखने में एक दूसरे से मुक़ाबिला करेंगे और एक दूसरे को ख़ुशख़बरी देंगे, उनकी मुहब्बत ईमान है और उनका बुग्ज़ निफ़ाक़ की अलामत है जिसने मेरे अह्ल-ए-बैत में से किसी से बुग्ज़ किया, वह मेरी शफ़ाअत से महरुम होगा, बेशक मैं नबी हूँ, जिसे अल्लाह ﷻ ने इज़्ज़त बख़्शी है, उसने मुझे सच के साथ भेजा है, मैं उसके वास्ते से कहता हूँ कि मेरे अह्ल-ए-बैत से और अ़ली ﵁ से मुहब्बत करो।" (**रावी:** अनस बिन मालिक ﵁ **मुहद्दिस:** इब्नुल क़ैसरानी ﵀, **मसदर (Source)** : ज़ख़ीरतुल हफ़्फ़ाज़, सफ़हा या रक़म: 4/2179)

हदीस-23

٢٣- من أحبني فليحب علياً، ومن أبغض علياً فقد أبغضني، ومن أبغضني فقد أبغض الله عزوجل، ومن أبغض الله أدخله النار.

راوی: عبد الله بن مسعودؓ محدث: خطیب بغدادی

مصدر: تاریخ بغداد صفحه یارقم : ١٣/٣٤.

"जिसने मुझसे मुहब्बत की उसे चाहिए कि अ़ली ﵁ से मुहब्बत करे, जिसने अ़ली ﵁ से बुग्ज़ किया, उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया, और जिसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया, अल्लाह ﷻ उसे दोज़ख़ में दाख़िल करेगा।" (**रावी:** अब्दुल्लाह बिन मसऊद ﵁ **मुहद्दिस:** ख़तीब बग़दादी ﵀, **मसदर (Source)** : तारीख़-ए-बग़दाद, सफ़हा या रक़म: 13/34)

हदीस-24

۲۴- من أحب علياً فقد أحبني ، ومن أبغض علياً فقد أبغضني .
راوی: سلمان فارسیؓ محدث: ابن تیمیه
مصدر: منهاج السنه صفحه یا رقم : ۳۷/ ۵۔

"जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिस ने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया उसने मुझसे बुग्ज़ किया।" (**रावी:** सलमान फ़ारसी ﷺ **मुहद्दिस:** इब्न-ए-तैमिया, **मसदर (Source):** मिनहाज उलसुना, सफ़हा या रक़म: 5/37)

हदीस-25

۲۵- من أحب علياً فقد أحبني ، ومن أبغض علياً فقد أبغضني .
راوی: سلمان فارسیؓ محدث: البانی
مصدر:صحیح الجامع صفحه یا رقم : ۶۳۵۹۔

"जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की, उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिसने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया उसने मुझसे बुग्ज़ किया ।" (**रावी:** सलमान फ़ारसी ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source)** : सहिहुल जामेअ, सफ़हा या रक़म: 6359)

हदीस-26

۲۶- من سب علياً فقد سبني، ومن سبني فقد سب الله .
راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه
محدث:البانی مصدر: ضعیف الجامع صفحه یارقم : ۵۶۱۸۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी, और जिसने मुझे गाली दी, उसने अल्लाह ﷻ को गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source)** : ज़ईफ़ उलजामेअ, सफ़्हा या रक़्म: 5618)

हदीस-27

۲۸۔ من سب علیاً فقد سبنی ، ومن سبنی فقد سب الله .

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه

محدث:محمد جار الله صعدی

مصدر:النوافح العطرة صفحه یارقم : ۳۸۳۔

"जिसने मुझे छोड़ा, उसने अल्लाह ﷻ को छोड़ा, और जिसने अ़ली ﷺ को छोड़ा, गोया उसने मुझे छोड़ा, और जिसने उससे दोस्ती की, उसने मुझसे दोस्ती की।" (**रावी:** अबू हरीह ﷺ **मुहद्दिस:** ज़हबी, **मसदर (Source)** : मीज़ान उल ऐतदाल, सफ़्हा या रक़्म: 2/49)

हदीस-28

۲۷۔ من فارقنی فارق الله ، ومن فارق علیاً فقد فارقنی ، ومن تولاه فقد تولانی .

راوی: ابو هریرةؓ محدث : ذهبی

مصدر: میزان الاعتدال

صفحه یارقم : ۴۹/۲۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी, और जिसने मुझे गाली दी, उसने अल्लाह ﷻ को गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया رضي الله عنها **मुहद्दिस:** मुहम्मद जारुल्लाह सादी ﷫ **मसदर (Source)** : अलनवाफ़ह उलअतरा, सफ़हा या रक़म: 383)

हदीस-29

۲۹۔ من سب علیاً فقد سبنی ، ومن سبنی فقد سب الله ۔

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه محدث : البانی

مصدر: ضعیف الجامع صفحه یارقم: ۵٦١٨۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी, और जिसने मुझे गाली दी, उसने अल्लाह ﷻ को गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया رضي الله عنها **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी **मसदर (Source)** : ज़ईफ़ उलजामेअ, सफ़हा या रक़म: 5618)

हदीस-30

۳۰۔ من سب علیاً فقد سبنی ، ومن سبنی فقد سب الله ۔

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه

محدث:محمد جار الله صعدی

مصدر:النوافح العطرة صفحه یارقم : ۳۸۳۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी, और जिसने मुझे गाली दी, उसने अल्लाह ﷻ को गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया رضي الله عنها **मुहद्दिस:** मुहम्मद जारुल्लाह सादी ﷫, **मसदर (Source)** : अलनवाफ़ह उल अतरा, सफ़हा या रक़म: 383)

हदीस-31

۳۱۔ من سب علياً فقد سبني ، ومن سبني فقد سب الله ۔
راوی: ام سلمه هند بنت ابو اميه محدث:البانی
مصدر:السلسلة الضعيفة صفحه يارقم: ۲۳۱۰۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी, और जिसने मुझे गाली दी, उसने अल्लाह ﷻ को गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया ﷺ **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source):** अल सिलसिलातुल ज़ईफ़ा, सफ़हा या रक़्म: 231)

हदीस-32

۳۲۔ دخلت على أم سلمة فقالت لی: أیسب رسول اللهﷺ فيكم ؟ قلت: معاذ الله! أو سبحان الله ، أو كلمة نحوها ، قالت: سمعت رسول اللهﷺ يقول: من سب علياً فقد سبني ۔
راوی: ام سلمه بنت ابو اميه محدث: هيثمی
مصدر: مجمع الزوائد صفحه يارقم : ۹/۱۳۳

मैं हज़रत उम्म-ए-सलमा ﷺ के पास आई, तो उन्हों ने मुझसे फ़रमाया:" क्या तुम्हारे दरमियान रसूलल्लाह ﷺ को गाली दी जा रही है? "मैं ने कहा: अल्लाह ﷻ की पनाह, सुब्हानल्लाह !!" उन्हों ने फ़रमाया: 'मैं ने रसूलल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना है: "जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी ।"
(**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया ﷺ **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी ﷺ **मसदर (Source):** मजमा उलज़वाइद, सफ़हा या रक़्म: 9/133)

हदीस-33

۳۳۔ من سب علیاً فقد سبنی ۔

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه محدث : شوکانی

مصدر: در السحابة صفحه یارقم : ١٦٥ ۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया رضی اللہ عنہا **मुहद्दिस:** शौकानी رحمہ اللہ, **मसदर (Source):** दारुस्सहाबा, सफ़हा या रक़म: 165)

हदीस-34

۳۴۔ من سب علیاً فقد سبنی ۔

راوی: ام سلمه هند بنت ابوامیه محدث : البانی

مصدر: تخریج مشکاة المصابیح صفحه یارقم : ٦٠٤٧۔

"जिसने अ़ली ﷺ को गाली दी, उसने मुझे गाली दी।" (**रावी:** उम्म-ए-सलमा हिन्द बिंत-ए-अबू उमैया رضی اللہ عنہا **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी, **मसदर (Source) :** तख़रीज मिशकातुल मुसाबीह, सफ़हा या रक़म: 6047)

हदीस-35

۳۵۔ من أطاع علياً فقد أطاعني ، ومن عصى علياً فقد عصاني، ومن عصاني فقد عصى الله ، ومن أحب علياً فقد أحبني، ومن أحبني فقد أحب الله ، ومن أبغض علياً فقد أبغضني، ومن أبغضني فقد أبغض الله ، لا يحبك إلا مؤمن ولا يبغضك إلا كافر أو منافق۔

راوی: یعلی بن مره محدث: ابن القیسرانی

مصدر: ذخیرة الحفاظ صفحه : ٤/٢٢١٠

"जिसने अ़ली ﷺ की इताअत की, उसने मेरी इताअत की, और जिसने अ़ली ﷺ की नाफ़रमानी की उसने मेरी नाफ़रमानी की, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने अल्लाह ﷻ की नाफ़रमानी की, जिसने अ़ली ﷺ से मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की, और जिसने मुझसे मुहब्बत की उसने अल्लाह ﷻ से मुहब्बत की, और जिसने अ़ली ﷺ से बुग्ज़ किया, उसने मुझसे बुग्ज़ किया, और जिसने मुझसे बुग्ज़ किया, उसने अल्लाह ﷻ से बुग्ज़ किया, (ऐ अ़ली ﷺ!) तुमसे मुहब्बत नहीं करेगा, मगर मो'मिन, और तुमसे बुग्ज़ नहीं करेगा, मगर काफ़िर या मुनाफ़िक़।" (**रावी**: यअ़ली बिन मर्रह ﷺ, **मुहद्दिस**: इब्नुल क़ैसरानी ﷺ, **मसदर (Source)**: ज़ख़ीरतुल हुफ़्फ़ाज़, सफ़्हा या रक़म: 4/221)

हदीस-36

٣٦- بعث رسول الله ﷺ علياً أميراً على اليمن ، وبعث خالد بن الوليد على الجبل ، فقال: إن اجتمعتما فعليٌّ على الناس ، فالتقوا وأصابوا من الغنائم مالم يصيبوا مثله ، وأخذ عليٌّ جارية من الخمس ، فدعا خالد بن الوليد بريدةً ، فقال: اغتنمها فأخبر النبي ﷺ بما صنع ، فقدمت المدينة ودخلت المسجد ، ورسول الله ﷺ في منزله ، وناس من أصحابه على بابه ، فقالوا: ماالخبر يا بريدة ؟ فقلت: خير ، فتح الله على المسلمين ، فقالوا: ما أقدمك ؟ قال: جارية أخذها علي من الخمس ، فجئت لأخبر النبي ﷺ ، قالوا: فأخبره ، فإنه يسقطه من عين رسول الله ﷺ ، ورسول الله ﷺ يسمع الكلام ، فخرج مغضباً وقال: مابال أقوام ينقصون علياً ، من ينتقص علياً فقد انتقصني ، ومن فارق علياً فقد فارقني ، إن علياً مني وأنا منه ، خلق من طينتي وخلقت من طينة إبراهيم ،

وأنـا أفـضـل مـن إبـراهيم ، "ذرية بعضها من بعض ، والله سميع علـيـم " وقـال: يا بريدة! أما علمت أن لعلى أكثر من الجارية التى أخـذوإنـه ولـيـكـم من بعدى ، فقلت: يا رسول الله! بالصحبة ، إلا بسـطـت يـدك حتـى أبـايـعك على الإسلام جديداً ،قال: فمافارقته حتى بايعته على الإسلام-

راوى: بريده: محدث: طبرانى مصدر: معجم اوسط

صفحه يا رقم: ١٦٢/ ٦-

हुज़ूर अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली رضي الله عنه को यमन का अमीर बना कर भेजा, और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद رضي الله عنه को जबल का अमीर बना कर भेजा, और यह फ़रमाया: ''अगर तुम दोनों इकट्ठे हो जाओ, तो अ़ली رضي الله عنه अमीर होंगे।'' चुनांचे ये सब लोग इकट्ठे हो गए और बहुत सी ग़नीमत हासिल की, कि उस जैसी ग़नीमत कभी न हाथ आई थी, हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ख़ुम्स में से एक बाँदी ले ली, तो हज़रत ख़ालिद رضي الله عنه ने हज़रत बुरैदा رضي الله عنه को बुलाया और कहा: इसकी ख़बर रसूल ﷺ को जा कर दो, (हज़रत बुरैदा رضي الله عنه फ़रमाते हैं) मैं मदीना आया और मस्जिद में दाख़िल हुआ, रसूलल्लाह ﷺ अपने घर में थे और कुछ सहाबा आप ﷺ के दरवाज़े पर थे, लोगों ने पूछा: ''क्या ख़बर है, ऐ बुरैदा!'' मैं ने कहा: ''अच्छी ख़बर है, अल्लाह ﷻ ने मुसलमानों को फ़तह दी,'' उन्होंने पूछा: आपके आने की क्या वजह है? मैं ने कहा: "हज़रत अ़ली رضي الله عنه ने ख़ुम्स से एक बाँदी ले ली है, तो मैं रसूलल्लाह ﷺ को इसकी ख़बर देने आया हूँ", बाज़ लोगों ने कहा: हाँ, आप ﷺ को इसकी ख़बर दो, इससे अ़ली رضي الله عنه हुज़ूर ﷺ की नज़र में कम रुतबा हो जाएँगे, आप ﷺ ये सब बातें सुन रहे थे, आप ﷺ गुस्से में बाहर निकल कर आए और फ़रमाया: **"लोगों को क्या हुआ कि अ़ली رضي الله عنه की तनक़ीस करते हैं, जिसने अ़ली رضي الله عنه की तनक़ीस की उसने मेरी तनक़ीस की, और जिसने अ़ली رضي الله عنه को छोड़ा, उसने मुझे छोड़ा, अ़ली رضي الله عنه मुझसे हैं और मैं अ़ली رضي الله عنه**

से हूँ, उसे मेरी मिट्टी से पैदा किया गया है और मुझे हज़रत इब्राहीम ﷺ की मिट्टी से पैदा किया गया है, और मैं हज़रत इब्राहीम ﷺ से अफ़ज़ल हूँ। ''ذرية بعضها من بعض، والله سميع عليم'' और आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ बुरैदा ﷺ ! क्या तुम नहीं जानते कि अ़ली ﷺ के लिए इससे ज़ियादा बांदियाँ हैं, जो उन्होंने ली हैं, और वो मेरे बाद तुम्हारे वली हैं", मैं ने कहा: ''ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! आपको सोहबत का वास्ता! अपना हाथ दीजिये, ताकि मैं आपके हाथ पर इस्लाम की अज़ सर-ए-नौ बैअत करूँ, फिर मैं ने जब तक बैअत न कर ली, आपसे जुदा न हुआ।' **(रावी:** बुरैदा ﷺ **मुहद्दिस:** इमाम तबरानी ﷺ **मसदर (Source) :** मोअजम औसत, सफ़हा या रक़्म: 6/162)

हदीस-37

٣٧- بعث رسول الله ﷺ علياً أميراً على اليمن ، وبعث خالد بن الوليد على الجبل ، فقال: إن اجتمعتما فعليٌ على الناس ، فالتقوا وأصابوا من الغنائم مالم يصيبوا مثله ، وأخذ عليٌ جارية من الخمس ، فدعا خالد بن الوليد بريدةً، فقال: اغتنمها فأخبر النبي ﷺ بما صنع ، فقدمت المدينة ودخلت المسجد ،ورسول الله ﷺ في منزله ، وناس من أصحابه على بابه ، فقالوا: ماالخبر يا بريدة ؟ فقلت: خير ، فتح الله على المسلمين ، فقالوا: ما أقدمك ؟ قال: جارية أخذها علي من الخمس ، فجئت لأخبر النبي ﷺ ، قالوا: فأخبره ، فإنه يسقطه من عين رسول الله ﷺ ،ورسول الله ﷺ يسمع الكلام ، فخرج مغضباً وقال: مابال أقوام ينقصون علياً ،من ينتقص علياً فقد انتقصني ،ومن فارق علياً فقد فارقني، إن علياً مني وأنا منه ، خلق من طينتي وخلقت من طينة إبراهيم،

وأنا أفضل من إبراهيم ، "ذرية بعضها من بعض ، والله سميع عليم " وقال: يا بريدة! أما علمت أن لعلى أكثر من الجارية اللتى أخذوإنه وليكم من بعدى ، فقلت: يا رسول الله! بالصحبة ، إلا بسطت يدك حتى أبايعك على الإسلام جديداً ،قال: فمافارقته

راوی: بریده بن حصیب اسلمی

محدث: ھیثمی مصدر: مجمع الزوائد

صفحہ یارقم: ۹/۱۳۱۔

हुज़ूर अकरम ﷺ ने हज़रत अ़ली ؓ को यमन का अमीर बना कर भेजा, और हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ؓ को जबल का अमीर बना कर भेजा, और यह फ़रमाया: "अगर तुम दोनों इकट्ठे हो जाओ, तो अ़ली ؓ अमीर होंगे," चुनांचे ये सब लोग इकट्ठे हो गए और बहुत सी ग़नीमत हासिल की, कि उस जैसी ग़नीमत कभी न हाथ आई थी, हज़रत अ़ली ؓ ने ख़ुम्स में से एक बाँदी ले ली, तो हज़रत ख़ालिद ؓ ने हज़रत बुरैदा ؓ को बुलाया, और कहा: इसकी ख़बर रसूल ﷺ को जा कर दो, (हज़रत बुरैदा ؓ फ़रमाते हैं) मैं मदीना आया और मस्जिद में दाख़िल हुआ, रसूलल्लाह ﷺ अपने घर में थे और कुछ सहाबा आप ﷺ के दरवाज़े पर थे, लोगों ने पूछा: "क्या ख़बर है?, ऐ बुरैदा ؓ!" मैं ने कहा: "अच्छी ख़बर है, अल्लाह ﷻ ने मुसलमानों को फ़तह दी," उन्होंने पूछा: आपके आने की क्या वजह है? मैं ने कहा: "हज़रत अ़ली ؓ ने ख़ुम्स से एक बाँदी ले ली है, तो मैं रसूलल्लाह ﷺ को इसकी ख़बर देने आया हूँ", बाज़ लोगों ने कहा: हाँ, आप ﷺ को इसकी ख़बर दो, इससे अ़ली ؓ हुज़ूर ﷺ की नज़र में कम रुतबा हो जाएँगे, आप ﷺ ये सब बातें सुन रहे थे, आप ﷺ गुस्से में बाहर निकल कर आए और फ़रमाया: **"लोगों को क्या हुआ कि अ़ली ؓ की तनक़ीस करते हैं, जिसने अ़ली ؓ की तनक़ीस की उसने मेरी तनक़ीस की, और जिसने अ़ली ؓ को छोड़ा, उसने मुझे छोड़ा, अ़ली ؓ मुझसे हैं और मैं अ़ली ؓ**

से हूँ, उसे मेरी मिट्टी से पैदा किया गया है और मुझे हज़रत इब्राहीम ﷺ की मिट्टी से पैदा किया गया है, और मैं हज़रत इब्राहीम ﷺ से अफ़्ज़ल हूँ। "ذرية بعضها من بعض، والله سميع عليم" और आप ﷺ ने फ़रमाया: "ऐ बुरैदा ! क्या तुम नहीं जानते कि अ़ली के लिए इससे ज़ियादा बांदियाँ हैं, जो उन्होंने ली हैं, और वो मेरे बाद तुम्हारे वली हैं", मैं ने कहा: "ऐ अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ! आपको सोहबत का वास्ता! अपना हाथ दीजिये, ताकि मैं आपके हाथ पर इस्लाम की अज़ सर-ए-नौ बैअत करूँ, फिर मैं ने जब तक बैअत न कर ली, आपसे जुदा न हुआ।' (**रावी:** बुरैदा **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी **मसदर (Source)** : मज्म उल जवाइद, सफ़्हा या रक़्म: 9/ 131)

हदीस-38

٣٨۔ مـابـال أقـوام يـنـقـصـون عـليـاً ،من ينتقص علياً فقد انتـقـصنـى ،ومن فارق علياً فقد فارقنى ، إن علياً منى وأنا منه ، خـلـق مـن طينتـى وخـلـقـت مـن طيـنـة إبراهيم ،وأنا أفضل من إبراهيم ، "ذرية بعضها من بعض ، والله سميع عليم"۔

راوی: بریده بن حصیب اسلمی محدث : البانی

مصدر : السلسلة الضعيفة صفحه يارقم:٤٩٠٦۔

"लोगों को क्या हुआ कि अ़ली की तनक़ीस करते हैं, जिसने अ़ली की तनक़ीस की उसने मेरी तनक़ीस की, और जिसने अ़ली को छोड़ा, उसने मुझे छोड़ा, अ़ली मुझसे हैं और मैं अ़ली से हूँ, उसे मेरी मिट्टी से पैदा किया गया है और मुझे हज़रत इब्राहीम ﷺ की मिट्टी से पैदा किया गया है, और मैं हज़रत इब्राहीम ﷺ से अफ़्ज़ल हूँ। (**रावी:** बुरैदा बिन हसीब असलमी **मुहद्दिस:** अल्लामा अलबानी **मसदर (Source)** : सिलसिलतुल ज़ईफ़ा, सफ़्हा या रक़्म: 4906)

हदीस-39

٣٩- كنت جالساً فى المسجد أنا و رجلين معى ، فتذاكرنا علياً فتناولنا منه ، فأقبل رسول الله ﷺ غضبان ،يعرف فى وجهه الغضب ، فتعوذت بالله من غضبه، فقال ﷺ: مالكم ولى ، من آذى علياً فقد آذانى ۔

راوی : سعد بن ابی وقاص ۔ محدث: هیثمی ۔

مصدر : مجمع الزوائد صفحه یا رقم : ۹/ ۱۲۹۔

मैं दो शख़्सों के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, हज़रत अ़ली ؓ का तज़्किरा हुआ, तो हम ने उनकी शान में कोई नामुनासिब बात कह दी, रसूलल्लाह ﷺ गुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए, गुस्सा आपके चेहरे पर नुमायाँ था, मैं ने कहा: मैं रसूलल्लाह ﷺ के ग़ज़ब से अल्लाह ﷻ की पनाह चाहता हूँ, आप ﷺ ने फरमाया: तुम्हारा मुझसे क्या तआल्लुक़, जिसने अ़ली ؓ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी। (**रावी:** साद बिन अबी वक़्क़ास ؓ **मुहद्दिस:** इमाम हैसमी ؒ, **मसदर (Source):** मजमा उल्ज़वाइद। सफ़्हा या रक़्म: 9/129)

हदीस-40

٤٠- مالى ومالكم ، من آذى علياً فقد آذانى ۔

راوی: سعدؓ محدث : ابن حجر

مصدر: المطالب العالية صفحه یارقم : ٤٠٣٩۔

"तुम्हारा मुझसे क्या तआल्लुक़, जिसने अ़ली ؓ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी।" (**रावी:** साद ؓ **मुहद्दिस:** इब्न-ए-हजर ؒ **मसदर (Source):** अलमतालिब उलआलिया, सफ़्हा या रक़्म: 4039)

हदीस-41

۴۱۔ عن عمرو بن شاسؓ ،قال: قال رسول الله ﷺ: يا عمرو! من آذى علياً فقد آذاني ۔

اوردوسری روایت میں ہے: كنت جالساً في المسجد أنا و رجلان معي، فنلنا من علي، فأقبل رسول الله ﷺ غضبان، يعرف في وجهه الغضب، فتعوذت بالله من غضبه، فقال ﷺ: مالكم ولي، من آذى علياً فقد آذاني ۔

راوی: پہلی روایت عمرو بن شاس سے اور دوسری سعد بن ابی وقاصؓ سے محدث: ابن کثیر مصدر: البداية والنهاية صفحه يارقم: ۳۸۲۔

'आप ﷺ ने फ़रमाया: ऐ उमरो! जिसने अ़ली ؑ को ईज़ा दी, उसने मुझे ईज़ा दी। और दूसरी रिवायत में है: मैं दो शख़्सों के साथ मस्जिद में बैठा हुआ था, हज़रत अ़ली ؑ की शान में किसीने कोई नामुनासिब बात कह दी, रसूलल्लाह ﷺ गुस्से की हालत में तशरीफ़ लाए, गुस्सा आपके चेहरे पर नुमायाँ था, मैं ने कहा: मैं रसूलल्लाह ﷺ के ग़ज़ब से अल्लाह ﷻ की पनाह चाहता हूँ, आप ﷺ ने फरमाया: "तुम्हारा मुझसे क्या तआल्लुक़, जिसने अ़ली ؑ को ईज़ा दी उसने मुझे ईज़ा दी।" (**रावी:** पहली रिवायत उमरो बिन शास से और दूसरी साद बिन अबी वक़्क़ास ؓ से, **मुहद्दिस:** इब्न-ए-कसीर, **मसदर (Source) :** अलबिदाया वलजन्निहाया, सफ़्हा या रक़म: 382)
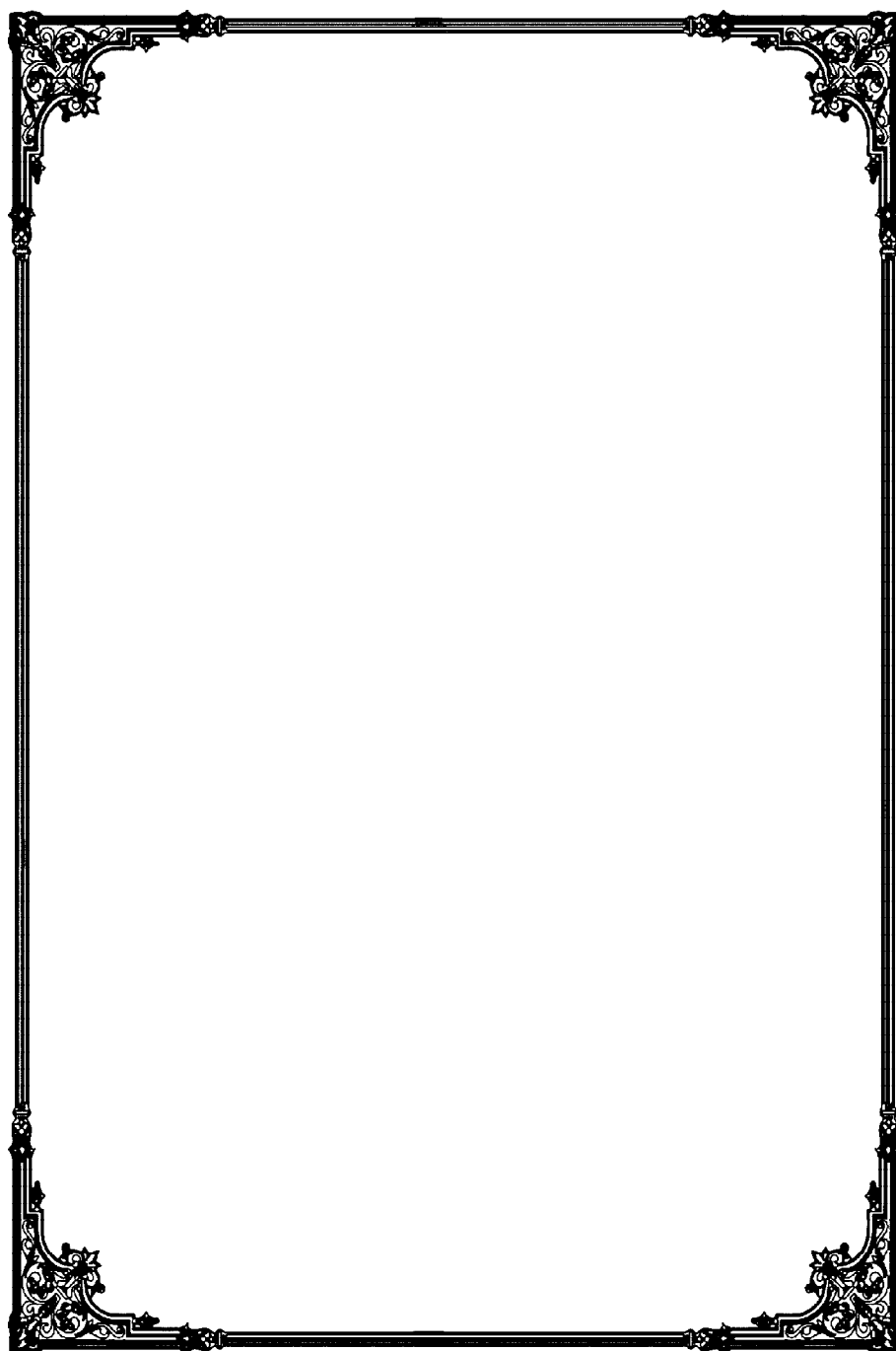
सिलसिलतुल अहादीस-ए-सहीहा
अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी

(अमीरुल मो'मीनीन ﷺ को ईज़ा पहुंचाने की हुरमत से मुता'ल्लिक़ हदीस की सही व तख़रीज सलफ़ी आलिम अल्लामा अलबानी ने अपनी किताब सिलसिलतुल अहादीस-ए-सहीहा में की है।)

(2295)من آذى عليا فقد آذاني

روى عن جمع من الصحابة:

الأول :عن عمرو بن شاس.رواه البخاري في "التاريخ" (307/2/3) والفسوي في "المعرفة" (1/329-330) وأحمد (483/3) وابن حبان (2202) والحاكم (122/3) وصححه، ووافقه الذهبي!وابن عساكر (109/2/12) عن محمد بن إسحاق حدثني أبان بن صالح حدثني الفضل بن معقل عن عبد الله بن نيار الأسلمي عنه .ثم روى ابن عساكر من طريق موسى بن عمير عن عقيل بن نجدة بن هبيرة عن عمرو بن شاس به .قلت :في الطريق الأولى الفضل بن معقل -وهو ابن سنان الأشجعي -ذكره ابن أبي حاتم (87/2/3) من رواية أبان هذا فقط، ولم يذكر فيه جرحا ولا تعديلا .وفي الطريق الأخرى عقيل بن نجدة، لم أجد من ذكره .وموسى بن عمير، إن كان القرشي الأعمى فهو متروك، وإن كان التميمي العنبري فهو ثقة .

الثاني :عن سعد بن أبي وقاص رواه الهيثم بن كليب في "المسند" (15/2) وأبو يعلى (رقم 770) والبزار (2562) والقطيعي في زيادته على "فضائل الصحابة" (1078) . وابن عساكر عن قنان النهمي حدثنا مصعب بن سعد عن أبيه مرفوعا به . قلت :وهذا إسناد حسن، قنان هو ابن عبد الله النهمي، وثقه ابن معين وابن حبان، وقال النسائي :ليس بالقوي .

الثالث :جابر بن عبد الله :رواه ابن عساكر، وكذا السهمي في"تاريخ جرجان"(325) عن إسماعيل بن بهرام الكوفي حدثني محمد بن جعفر عن أبيه عن جده عن جابر مرفوعا بمعناه .قلت: إسماعيل هذا صدوق، توفي سنة (241)من شيوخ ابن ماجة .لكن محمدا هذا -وهو ابن جعفر الصادق -تكلم فيه .وبالجملة، فالحديث صحيح بمجموع هذه الطرق .

(تنبيه) : لقد تكلم صاحبنا وصي الله بن محمد بن عباس في تعليقه على" الفضائل"بكلام جيد على الحديث، من الطريقين الأولين، ولكنه بعد أن ضعف الأولى، وحسن الأخرى، عاد فذهل فقال عقب الأخرى :ومضى برقم(981) بإسناد صحيح عن عمرو بن شاس نحوه !"وأما المعلق على أبي يعلى فعلق تحسين إسناده بسماع قنان من مصعب، مع أنه صرح بالتحديث في أبي يعلى وغيره!

(سلسلة الأحاديث الصحيحة للألباني،رقم الحديث:2295)

(2295) “जिसने अ़ली ﷺ को अज़ीयत पहुँचाई, उसने मुझे अज़ीयत पहुँचाई” यह हदीस सहाबा की एक जमाअत ने रिवायत की है:

(अव्वल) उमरो बिन शास ﷺ से । उनसे रिवायत बयान की है इमाम बुख़ारी ﷺ ने “तारीख़” (307/2/3) में, फ़सवी ने “अलमारफ़ा” (330-329/1) में, इमाम अहमद ﷺ (483/3) ने, इब्न-ए-हब्बान ﷺ (2202) ने, इमाम हाकिम ﷺ

(122/3) हाकिम ﷺ ने इस हदीस को सही कहा है और इमाम ज़हबी ने उनकी ताईद की है! और इब्न-ए-असाकिर ﷺ (109/2/12) ने मुहम्मद बिन इसहाक़ ﷺ से, उन्हों ने कहा कि मुझसे हदीस बयान की अबान बिन स्वालेह ने, उन्हों ने कहा कि मुझसे हदीस बयान की फ़ज़ल बिन मअक़ल ने, वह रिवायत करते हैं अब्दुल्लाह बिन नयार असलमी ﷺ से और उन्हों ने रिवायत बयान की उमरो बिन शास ﷺ से।

• उसके बाद इसी हदीस को इब्न-ए-असाकिर ﷺ ने मूसा बिन उमैर की सनद से रिवायत किया है, वो रिवायत करते हैं अक़ील बिन नजदा बिन हुबैरा से और वो रिवायत करते हैं उमरो बिन शास ﷺ से।

• मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ: हदीस की पहली सनद में फ़ज़ल बिन मअक़ल है जो इब्न-ए-सनान अशजई कहलाता है। इब्न-ए-अबी हातिम ﷺ (87/2/3) ने सिर्फ़ अबान की इसी रिवायत में इसका ज़िक्र किया है और इसके बारे में कोई जिरह और तअदील बयान नहीं की। हदीस की दूसरी सनद में अक़ील बिन नजदा है, मुझे कोई ऐसा नहीं मिला जिसने इस रावी का ज़िक्र किया हो। इसी सनद में दूसरा रावी मूसा बिन उमैर है, इससे अगर क़ुर्शी अअमी मुराद है तो वह मतरूक है और अगर तमीमी अम्बरी मुराद है तो वह सिक़्क़ा(**Trustworthy**) है।

(**दोम**) साद बिन अबी वक़्क़ास ﷺ से। उनसे यह हदीस रिवायत की है हैसम बिन कलीब ने "मस्नद" (15/2) में, अबू यअला ﷺ (रक़म 770) ने, बाज़ार ﷺ (2562) ने, क़तीई ने "फ़ज़ाइलुल सहाबा" (1078) के अपने इज़ाफ़े में और इब्न-ए-असाकिर ﷺ ने क़नान नहमी से, वह कहते हैं कि हमसे मरफ़ूअनहदीस बयान की मुसअब बिन साद ने अपने वालिद से।

• मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ: यह सनद हसन है। क़नान से मुराद इब्न-ए-अब्दुल्लाह फ़हमी है, जिसे इब्न-ए-मोईन और इब्न-ए-हब्बान ﷺ ने सिक़्क़ा(**Trustworthy**) कहा है जबकि इमाम निसाइ ﷺ कहते हैं कि वह क़वी नहीं है।

(**सोम**) जाबिर बिन अब्दुल्लाह ﷺ से। उनसे यह हदीस रिवायत की है इब्न-ए-असाकिर ﷺ ने, इसी तरह "तारीख़ जरजान" (325) में सहमी ने इस्माइल बिन

बहराम कूफ़ी से, वह कहते हैं कि मुझसे हदीस बयान की मुहम्मद बिन जा'फ़र ने अपने वालिद से, अपने दादा के वास्ते से, वह इसी मफ़हूम की मरफ़ूअ रिवायत बयान करते हैं जाबिर ﷺ से। मैं (अल्लामा अलबानी) कहता हूँ: सनद में रावी इस्माइल सदूक़ है, उसकी वफ़ात सन (241 हिजरी) में हुई है, वह इब्न-ए-माजा ﷺ के शुयूख़ में से है लेकिन सनद में मुहम्मद से मुराद इब्न-ए-जा'फ़र सादिक़ ﷺ हैं, जिन पर कलाम किया गया है, फ़िल जुमला उन तमाम सनदों के मजमूए से **यह हदीस सहीह है।**

याद रखने की ख़ास बात

हमारे साथी और दोस्त वसीउल्लाह बिन मुहम्मद अब्बास ने "अ़लफ़ज़ाइल" पर अपनी तअ़लीक़ में ज़ेर-ए-बहस हदीस की पहली दोनों सनदों पर अच्छी गुफ़्तगू की है लेकिन पहली सनद को ज़ईफ़ और दूसरी सनद को हसन क़रार देने के बाद जब दोबारा लौटे तो भूल गए और दूसरी सनद के बाद यह लिख दिया कि इसी तरह की हदीस रक़म (981) के तहत उमरो बिन शास ﷺ से सही सनद के साथ गुज़र चुकी है। "मुस्नद अबी यअ़ली" के मुहक़्क़िक़ ने मसअब से कनान के समाअ की वजह से इस हदीस की सनद को हसन कहा है जबकि "मुस्नद अबी यअ़ली" वग़ैरह में उन्होंने अपने समाअ की सराहत की है। (सिलसिलतुल अहादीस अल सहीहा लिलअलबानी, रक़मुल हदीसः 2295)

सिलसिला

अलअहादीसुस्सहीहा

वशी मिन फ़िक़्हिहा व फ़वाइदिहीहा

मुहम्मद नासिरुद्दीन अलबानी

अल मुजिलदल ख़ामस

मकतबा उलआरिफ़ लिलनशरा वलतूरीअ
लिसाजहा साद बिन अब्दुर्रहमान अर्राशिद
अर्रियाद

«رواه الطبراني في «الكبير» بإسناد حسن».

طريق ثالث عن زكريا بن حكيم الحبطي: حدثنا عطاء بن السائب عن أبي الطفيل عن أبي ذر مرفوعاً.

أخرجه أبو نعيم في «أخبار أصبهان» (٢ / ١٢٩)، وابن عدي (١٤٨ / ١)، وقال: «لا أعلم يرويه بهذا الإسناد غير زكريا، وهو في جملة الذين يُجمع حديثهم».

قلت: وبالجملة؛ فالحديث بهذا الشاهد لا ينزل عن مرتبة الحسن. والله أعلم.

٢٢٩٥ - (مَنْ آذَى عليّاً فَقَدْ آذاني).

روي عن جمع من الصحابة:

الأول: عن عمرو بن شاس. رواه البخاري في «التاريخ» (٣ / ٢ / ٣٠٧)، والفسوي في «المعرفة» (١ / ٣٢٩ - ٣٣٠)، وأحمد (٣ / ٤٨٣)، وابن حبان (٢٢٠٢)، والحاكم (٣ / ١٢٢)، وصححه، ووافقه الذهبي (!)، وابن عساكر (١٢ / ١٠٩ / ٢) عن محمد بن إسحاق: حدثني أبان بن صالح: حدثني الفضل بن معقل عن عبد الله بن نيار الأسلمي عنه.

ثم روى ابن عساكر من طريق موسى بن عمير عن عقيل بن نجدة بن هبيرة عن عمرو بن شاس به.

قلت: في الطريق الأولى الفضل بن معقل - وهو ابن سنان الأشجعي - ذكره ابن أبي حاتم (٣ / ٢ / ٦٧) من رواية أبان هذا فقط، ولم يذكر فيه جرحاً ولا تعديلاً.

وفي الطريق الأخرى عقيل بن نجدة، لم أجد من ذكره. وموسى بن عمير، إن كان القرشي الأعمى فهو متروك، وإن كان التميمي العنبري فهو ثقة.

الثاني: عن سعد بن أبي وقاص، رواه الهيثم بن كليب في «المسند» (١٥ / ٢)، وأبو يعلى (رقم ٧٧٠)، والبزار (٢٥٦٢)، والقطيعي في زيادته على «فضائل الصحابة»